जनगणना 2001 की अस्थाई रिपोर्ट

डॉ. नरेश पुरोहित

भारत की जनगणना यानी दुनिया की सबसे बड़ी प्रशासनिक कार्यवाही 9 से 28 फरवरी, 2001 तक चली। इसके बाद 1 से 5 मार्च के बीच फिर जनगणना का एक दौर हुआ। 26 मार्च को भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त ने इसकी अस्थाई रिपोर्ट जारी कर दी।

यह रिपोर्ट कई सुखद सूचनाएं लाई है। जैसे देश में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या पिछले दस सालों में 52.21 फीसदी से बढ़कर 65.38 फीसदी हो गई है; पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की कुल संख्या बढ़ी है आदि। यह रिपोर्ट कई मायनों में देश में सामाजिक सुधार के संकेत देती है। जनसंख्या बढ़कर एक अरब की सीमा ज़रूर पार कर गई है लेकिन शिक्षा व स्वास्थ्य के स्तर में भी सुधार हो रहा है और गरीबी रेखा के नीचे जीवन बसर करने वाले लोगों की संख्या कम हो रही है। (यह बात दीगर है कि गरीबी रेखा अपने आप में राजनीति प्रेरित एक परिवर्तनीय रेखा है)।

आबादी और वृद्धि दर

इस रिपोर्ट के अनुसार पहली मार्च की आधी रात को भारत की आबादी 1,02,70,15,247 थी। इसमें पुरुषों की संख्या 53,12,27,078 और महिलाएं 49,57,38,169 थीं। जनगणना रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि दुनिया की आबादी में भारत का हिस्सा अब 16.7 फीसदी हो गया है। 1981-91 के दौरान भारत की जनसंख्या वृद्धि दर 23.86 प्रतिशत थी जो पिछले दशक (1991-2001) में 2.52 फीसदी गिरकर 21.34 प्रतिशत हो गई। आज़ादी के बाद जनसंख्या वृद्धि दर में आई यह सबसे भारी कमी है। राज्यों के हिसाब से देखें तो केरल में जनसंख्या वृद्धि की दर सबसे कम 9.42 प्रतिशत रही। इसके बाद तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश का नम्बर आता है। इन दोनों राज्यों की जनसंख्या वृद्धि दर क्रमशः 11.19 और 13.86 फीसदी है, जो पहले ही काफी कम है।

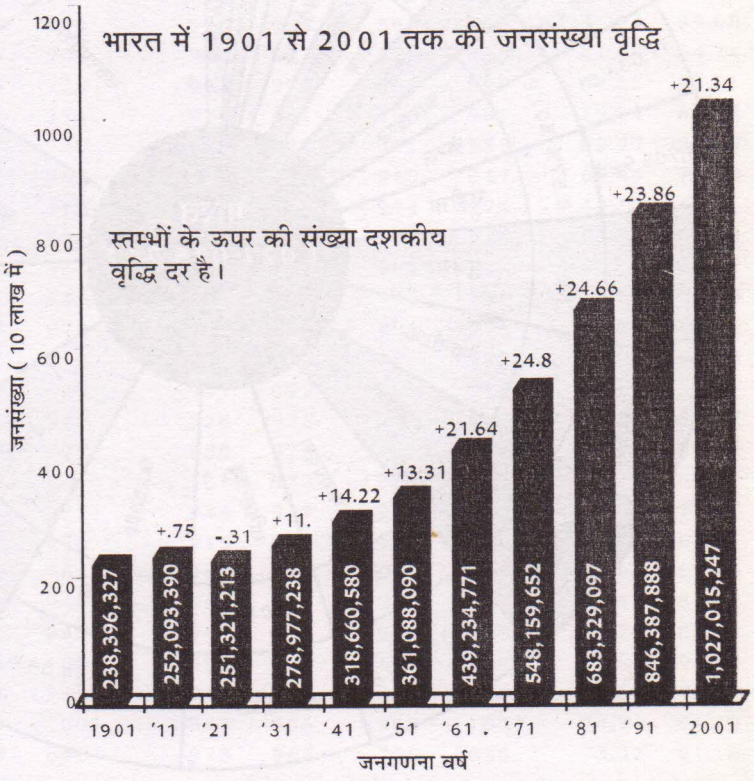

केन्द्रीय शासित प्रदेशों समेत 2001 के भारत की राज्यवार आबादी

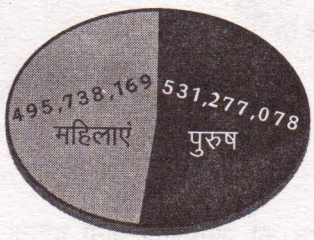

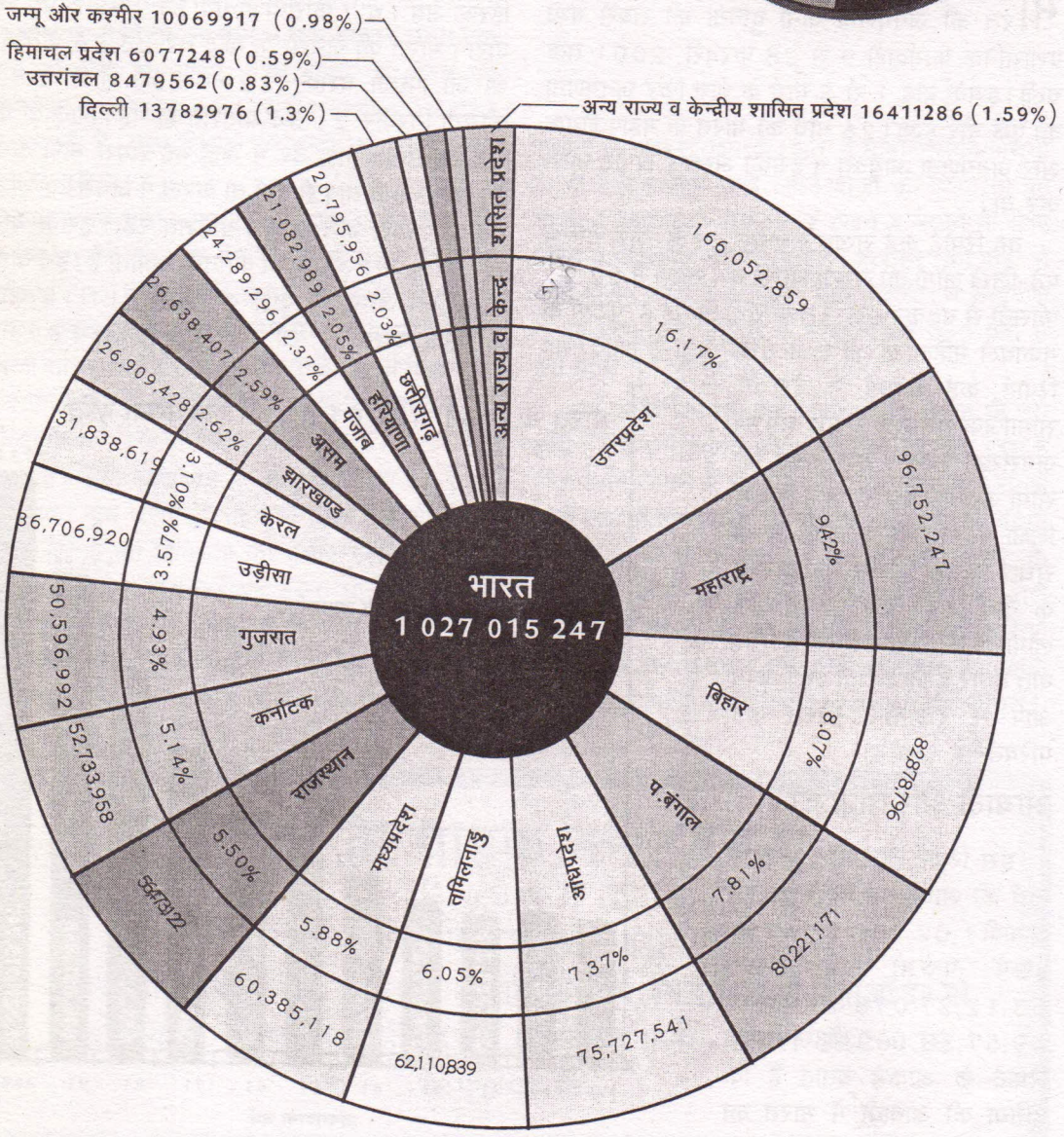

भारत में 1991 और 2001 में लिंग अनुपात व साक्षरता

राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश का कोड	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश*	लिंग अनुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाएं)						साक्षरता दर	
		कुल जनसंख्या में		0-6 वर्ष के बच्चों में		7 या 7 से ज़्यादा उम्र वग मे		कुल जनसंख्या में	
		1991	2001	1991	2001	1991	2001	1991	2001
	भारत	**927**	**933**	**945**	**927**	**923**	**935**	**52.20**	**65.49**
1	जम्मू और कश्मीर		900		937		894	-	54.46
2	हिमाचल प्रदेश	976	970	951	897	980	981	63.94	77.13
3	पंजाब	882	874	875	783	883	886	58.51	69.95
4	चंडीगढ़*	790	773	899	845	772	763	77.81	81.76
5	उत्तरांचल	936	964	948	906	933	976	57.75	72.28
6	हरियाणा	865	861	879	820	862	869	55.85	68.59
7	दिल्ली*	827	821	915	865	810	813	75.29	81.82
8	राजस्थान	910	922	916	909	908	925	38.55	61.03
9	उत्तरप्रदेश	876	898	927	916	863	895	40.71	57.36
10	बिहार	907	921	953	938	895	916	37.49	47.53
11	सिक्किम	878	875	965	986	860	858	56.94	69.68
12	अरुणाचल प्रदेश	859	901	982	961	829	888	41.59	54.74
13	नागालैण्ड	886	909	993	975	865	899	61.65	67.11
14	मणिपुर	958	978	974	961	955	981	59.89	68.87
15	मिज़ोरम	921	938	969	971	911	932	82.27	88.49
16	त्रिपुरा	945	950	967	975	940	947	60.44	73.66
17	मेघालय	955	975	986	975	974	974	49.10	63.31
18	असम	923	932	975	964	910	926	52.89	64.28
19	प. बंगाल	917	934	967	963	907	929	57.70	69.22
20	झारखण्ड	922	941	979	966	908	936	41.39	54.13
21	उड़ीसा	971	972	967	950	972	976	49.09	63.61
22	छत्तीसगढ़	985	990	984	975	986	992	42.91	65.18
23	मध्यप्रदेश	912	920	941	929	905	918	44.67	54.11
24	गुजरात	934	921	928	878	936	927	61.57	69.97
25	दमन और दीव*	969	709	958	925	971	682	71.20	81.09
26	दादरा और नगर हवेली*	952	811	1013	973	937	779	40.71	60.03
27	महाराष्ट्र	934	922	946	917	931	923	64.87	77.27
28	आंध्रप्रदेश	972	978	975	964	972	980	44.09	61.11
29	कर्नाटक	960	964	960	949	960	966	56.04	67.04
30	गोवा	967	960	964	933	967	964	75.51	82.32
31	लक्षद्वीप*	943	947	941	974	943	943	81.78	87.52
32	केरल	1036	1058	958	963	1049	1071	89.81	90.92
33	तमिलनाडु	974	986	948	939	978	992	62.66	73.47
34	पांडिचेरी*	979	1001	963	958	982	1007	74.74	81.49
35	अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह*	818	846	973	965	790	830	73.02	81.18

जनगणना के ताज़ा आंकड़ों के अनुसार अभी भी उत्तरप्रदेश सर्वाधिक आबादी वाला राज्य बना हुआ है। उत्तरांचल के अलग हो जाने के बाद भी इसकी आबादी 16 करोड़ से ज़्यादा है। उत्तरप्रदेश की आबादी भारत की कुल आबादी का 16.17 प्रतिशत है। इसके बाद साढ़े नौ करोड़ की आबादी वाले महाराष्ट्र का नम्बर आता है। झारखण्ड के अलग हो जाने के बाद सबसे अधिक आबादी वाला दूसरा राज्य होने का बिहार का दर्जा खत्म हो गया है। अब वह आठ करोड़ आबादी के साथ तीसरे नंबर पर है।

1991 में 6 साल तक के उम्र के बच्चों में प्रति एक हज़ार लड़कों पर 945 लड़कियां थीं। 2001 में यह संख्या काफी घटकर 927 हो गई है। सबसे ज़्यादा कमी हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, उत्तरांचल, महाराष्ट्र एवं संघ शासित चंडीगढ़ में आई है। क्या यह आधुनिक साधनों से कन्या भ्रूण को नष्ट कर देने का परिणाम है?

पश्चिम बंगाल भारत का सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य हो गया है। पश्चिम बंगाल और दूसरे नंबर वाले बिहार की प्रतिवर्ग कि.मी. आबादी क्रमशः 904 और 880 है। बंगाल व बिहार के अलावा पूरे भारत का जनसंख्या घनत्व भी बढ़ा है।

पिछले दस साल में भारत की आबादी में 18 करोड़ लोग और जुड़ गए हैं। यह ब्राज़ील की कुल जनसंख्या के बराबर है। गौरतलब है कि ब्राज़ील जनसंख्या के लिहाज़ से दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा देश है। ताज़ा आंकड़ों के अनुसार अब भारत में प्रतिवर्ग कि.मी. रहने वाले लोगों की औसत संख्या 324 हो गई है।

पुरुष-स्त्री अनुपात

2001 की जनगणना में प्रति हज़ार पुरुषों की संख्या के मुकाबले महिलाओं की संख्या में 6 की बढ़ोत्तरी हुई है। 1991 की जनगणना में प्रति 1000 पुरुषों पर 927 महिलाएं थीं जो अब बढ़कर 933 हो गई हैं। केरल में प्रति एक हज़ार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या 1058 है। प्रति हज़ार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या सबसे कम (861) हरियाणा में है।

केरल में पुरुष-स्त्री अनुपात महिलाओं के पक्ष में है। यहां महिलाओं की संख्या पुरुषों से ज़्यादा है और जनसंख्या वृद्धि की दर भारत के दूसरे किसी राज्य के मुकाबले कम (9.42 फीसदी) है।

राष्ट्रीय स्तर पर पुरुषों के अनुपात में महिलाओं की संख्या भले ही बढ़ गई हो लेकिन एक चिंताजनक तथ्य भी सामने आया है। वह यह कि 1991 के जनगणना आंकड़ों के मुकाबले इस बार बालक-बालिका अनुपात में कमी दर्ज की गई है। 1991 में 6 साल तक के उम्र के बच्चों में प्रति एक हज़ार लड़कों पर 945 लड़कियां थीं। 2001 में यह संख्या काफी घटकर 927 हो गई है। सबसे ज़्यादा कमी हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, उत्तरांचल, महाराष्ट्र एवं संघ शासित चंडीगढ़ में आई है। क्या यह आधुनिक साधनों से कन्या भ्रूण को नष्ट कर देने का परिणाम है?

साक्षरता दर

यह शिक्षा के क्षेत्र में हुए कामों और ग्रामीण स्तर तक बढ़ती जागरूकता की बदौलत भारत में साक्षर लोगों की संख्या में साफ बढ़ोत्तरी दर्ज हुई है। आज़ादी के बाद पहली बार निरक्षर लोगों की संख्या में कमी देखी गई है। जनगणना के ताज़ा आंकड़ों के अनुसार देश के तीन-चौथाई पुरुष व आधी से ज़्यादा महिलाएं साक्षर हो गई हैं। पुरुषों एवं महिलाओं में यह औसत क्रमशः 75.96 और 54.28 प्रतिशत है। जनगणना के ताज़ा आंकड़ों के मुताबिक भारत की साक्षरता दर में 13.17 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है। 1991 में भारत की साक्षरता दर 52.20 फीसदी थी, जो पिछले 10 साल में बढ़कर 65.49 फीसदी हो गई है। पुरुषों में साक्षरता की दर 11.83 फीसदी बढ़ी है, जबकि महिलाओं में यह 14 फीसदी बढ़ी है। 1991 की जनगणना के अनुसार पुरुषों और महिलाओं की साक्षरता दर में

24.85 फीसदी का अंतर था जो 2001 की जनगणना में कम होकर 21.68 फीसदी हो गया है।

केरल में अभी भी साक्षरता दर बाकी राज्यों के मुकाबले ज़्यादा है। यहां के 91.03 प्रतिशत लोग साक्षर हैं। इसके बाद मिज़ोरम और लक्षद्वीप का नम्बर आता है; यहां साक्षरों का प्रतिशत क्रमश: 88.41 और 87.36 है। साक्षरता दर के लिहाज़ से बिहार सबसे पिछड़ा राज्य है। अभी भी यहां की 46.94 फीसदी आबादी निरक्षर है।

कुछ सरोकार

जनगणना 2001 की अंतिम और स्थाई रिपोर्ट तैयार करने में लगभग 21 माह लगेंगे। इसमें हर गांव के आंकड़े शामिल किए जाएंगे। भारत की जनगणना दुनिया की सबसे बड़ी प्रशासनिक कार्यवाही है। नई सहस्त्राब्दी की इस पहली जनगणना में करीब 20 लाख कर्मचारियों ने हिस्सा लिया और 20 दिन में देश के करीब साढ़े छह लाख गांवों और पांच हज़ार शहरों में जनगणना का काम पूरा किया। ताज़ा जनगणना रिपोर्ट में कई ऐसी बातें हैं जिस पर हम संतोष कर सकते हैं। लेकिन इसके कुछ आंकड़े चिंतित करने वाले भी हैं। छह साल तक के बच्चों में बालिकाओं की संख्या कम होना एक खतरनाक संकेत है। इससे आभास होता है कि अभी भी कई राज्यों में लड़कियों की तुलना में लड़कों को प्राथमिकता दी जा रही है। नवजात बच्चों में स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव में मरने वाली ज़्यादातर लड़कियां होती हैं। इसमें सुधार होना ज़रूरी है। साक्षरता की दर बढ़ी है, लेकिन अभी भी लगभग आधी महिलाएं निरक्षर हैं। बिहार, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में अभी भी 60 फीसदी से ज़्यादा महिलाएं निरक्षर हैं।

ग्रामीण इलाकों में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए सरकार द्वारा आवंटित बजट के आंकड़े जनगणना की रिपोर्ट में नहीं दिए गए हैं। यह भी नहीं बताया गया है कि उसका क्या असर हुआ। लेकिन यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि अभी भी प्राथमिक शिक्षा में लड़कियों के स्कूल छोड़ने की दर लड़कों के मुकाबले काफी ज़्यादा है। जब तक नवजात बच्चों की प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं एवं प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था में सुधार नहीं लाया जाता, जनसंख्या वृद्धि दर व शिशु मृत्यु दर घटाने और साक्षरता बढ़ाने में कोई प्रभावी सफलता नहीं मिल पाएगी।

भारत में जातियों के आधार पर जनगणना नहीं होती है। 1871 (जब पहली बार जनगणना हुई थी) से 1931 तक जातियों के आधार पर जनगणना होती रही। लेकिन उस समय यह दुहाई देकर कि इससे जाति प्रथा को बढ़ावा मिलेगा यह प्रक्रिया रोक दी गई। अगर पिछड़ी जाति के लोगों की अलग से गिनती होती तो इससे समाज में उनकी हालत का सही अंदाज़ा लगाया जा सकता था। यह पता चलता कि सरकारी नौकरियों में उनकी कितनी उपस्थिति है और आर्थिक-सामाजिक ढांचे में उनका क्या स्थान है।

ताज़ा जनगणना रिपोर्ट में कई ऐसी बातें हैं जिस पर हम संतोष कर सकते हैं। लेकिन इसके कुछ आंकड़े चिंतित करने वाले भी हैं। छह साल तक के बच्चों में बालिकाओं की संख्या कम होना एक खतरनाक संकेत है। इससे आभास होता है कि अभी भी कई राज्यों में लड़कियों की तुलना में लड़कों को प्राथमिकता दी जा रही है। नवजात बच्चों में स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव में मरने वाली ज़्यादातर लड़कियां होती हैं। इसमें सुधार होना ज़रूरी है। साक्षरता की दर बढ़ी है, लेकिन अभी भी लगभग आधी महिलाएं निरक्षर हैं।

जनगणना 2001 को एक पहचान देने के लिए इसे एक प्रतीक चिन्ह (लोगो) दिया गया। यह चिन्ह हमारे देशवासियों को समर्पित है और उनके उत्साह और उच्चाकांशाओं को दर्शाता है। प्रतीक चिन्ह में घरों का होना घरेलू कामकाज को दर्शाता है और घरों में बैठे लोग देश की जनसंख्या को। चार मानव आकृतियों में दो स्त्री और दो पुरुष का होना आदर्श लिंग अनुपात को दर्शाता है और दो बच्चे देश की जनसंख्या को नियंत्रित करने के लक्ष्य की बानगी है। *(स्रोत फीचर्स)*